वसंत ऋतु : मार्च 2022

बुनियाद अंक

देशधारा

साहित्य, चिंतन और विमर्श को समर्पित वार्षिक पत्रिका

संपादक

भरत प्रसाद

उप-संपादक

सुनील कुमार साव

आलोक सिंह

शिलांग, मेघालय

वर्ष -1, अंक -1: बुनियाद अंक, बसंत ऋतु- 2022 ई.

संरक्षिका : सुश्री तसलीमा नसरीन

देशधारा

साहित्य, चिंतन और विमर्श को समर्पित वार्षिक पत्रिका

सम्पादक

भरत प्रसाद

उप सम्पादक

सुनील कुमार साव, आलोक सिंह

शिलांग, मेघालय

आवरण : चेतन औदिच्य सुपरिचित चित्रकार हैं। समकालीन कलाधारा में वे निरन्तर अपनी प्रयोगवादी चित्रकारी से चर्चित रहे हैं। देश के कई शहरों में औदिच्य की एकल तथा सामूहिक कला प्रदर्शनी में आयोजित हो चुकी है। राजस्थान साहित्य अकादमी, युगधारा, कला चर्चा आदि प्रतिष्ठानों से पुरस्कृत चेतन औदिच्य की दो काव्य कृतियाँ राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित हैं।

मुद्रण एवं प्रकाशन : अमन प्रकाशन 104-A/80C -रामबाग कानपुर -208012 (उ.प्र.)
फोन नं. 0512-3590496 (ऑफिस)
मो. नं. 09044344050 (ऋषभ बाजपेयी)

ईमेल : amanprakashan0512@gmail.com

मूल्य : ₹ 99.00

संस्थाओं के लिए : ₹ 100.00

वार्षिक सदस्यता : ₹ 150.00 (डाक खर्च सहित)

खाता संख्या(देशधारा) Bharat Prasad Tripathi
A/C.No. : 20072477616 (Saving Account)
IFS Code : SBIN0000181
Branch – 00181
SBI Branch, M.G. Road, Near GPO, Shillong

सम्पादकीय सम्पर्क : हिन्दी विभाग पूर्वोत्तर विश्वविद्यालय, शिलांग मेघालय-793022
मो.नं. : 09774125265,09383049141

ईमेल : deshdhara@gmail.com

समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र शिलाँग, मेघालय होगा।

नोट : प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक की सहमति अनिवार्य नहीं है।

सम्पादन एवं सह सम्पादन पूर्णत: अवैतनिक

स्वामी : सम्पादक-प्रकाशक द्वारा क्वार्टर नं. L-8,पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग (नेहू परिसर)-79302 से सम्पादित एवं अमन प्रकाशन, 104-A/80C, रामबाग, कानपुर -208012, (उ.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

अनुक्रम

सम्पादकीय : *विपश्यना* : भरत प्रसाद

अपनी खबर :

- ऊहापोह : तसलीमा नसरीन : **अनुवादिका – अमृता बेरा**
- सृजनयात्रा के यादगार पड़ाव : **अनंत कुमार सिंह**
- खतरों में ही जन्म लेते हैं सपने : **सुभाष राय**

सम्यक दृष्टि :

- आचार्य रामचंद्र शुक्ल का काव्यदर्शन : **मैनेजर पाण्डेय**
- भाषा की ज्ञान मीमांसा : **विनोद शाही**
- चंद्रकांत देवताले की कविताओं में जन पक्षधरता : **सेवाराम त्रिपाठी**
- मुक्ति आन्दोलन की पारस्परिकता – वाम , दलित सन्दर्भ : **बजरंग बिहारी तिवारी**
- साहित्य में सामाजिक चेतना और मार्क्स : **सुशील कुमार**

गद्यांतर :

- एक कवि की नोटबुक : **राजेश जोशी**
- थ्योरी में आलोचना : **राजेंद्र कुमार**
- मसाईमारा के जंगल : **शिवमूर्ति**
- माँ , पिता और मैं : **दिवाकर मुक्तिबोध**

दृश्यपट :

- महाभारत और सिनेमा : विजय शर्मा

देशेरमाटी :

- पश्चिमी बंगाल के युवा कवि : **अनुवादिका : मीतादास**
- समकालीन गुजराती कवि : **अनुवादिक : कुशल मेहता**

पूर्वाकाश :

- आबू जीशु : **अभिषेक कुमार यादव**
- अरुणाचली जनभाषाओं के कवि : **जमुना बीनी**
- अरुणाचल के युवा कवि : **तुनुंग ताबिंग**

कथागोई :

- कीमा : **कृष्ण बिहारी**
- दो कौड़ी का आदमी **: राकेश कुमार सिंह**
- मुखौटा : **गीता श्री**
- हवा बहुत तेज है : **कैलाश बनवासी**

काव्य क्षितिज :

- लीलाधर जगूड़ी की कविताएँ
- हरिश्चंद्र पाण्डेय की कविताएँ
- ए. अरविंदाक्षन की कविताएँ
- शैलेय की कविताएँ
- संतोष चतुर्वेदी की कविताएँ
- आशीष त्रिपाठी की कविताएँ
- कमलजीत चौधरी की कविताएँ
- स्मिता सिन्हा की कविताएँ
- यतीश कुमार की कविताएँ
- विहाग वैभव की कविताएँ
- मिथिलेश कुमार राय की कविताएँ

बेहन :

- अनुपम सिंह की कविताएँ

परिचर्चा:

- कौशल किशोर
- अरुण शीतांश

आरपार (पुस्तक समीक्षा)

- कविता का अमरफल (लीलाधर जगूड़ी) **; डॉ.आदित्य विक्रम सिंह**
- लिट्टी – चोखा तथा अन्य कहानियां **(गीता श्री) - अनीता पंडा**
- मैं एक बलुआ प्रस्तर खं (उषा किरण खान) **: सुनील कुमार शर्मा**
- कठिन का अखाड़ा ज (व्योमेश शुक्ल) **: डॉ. विजय कुमार**

सम्पादकीय

विपश्यना

भारत और विश्व में बेहिसाब फैलते बाजारतंत्र ने सृजन, कला और चिंतन की शक्ति को बेतरह दुष्प्रभावित किया है। नैसर्गिक मौलिकता और नवोन्मेष जो कि क्रिएटिविटी के बीजतत्व होते हैं- बौने और भोथरे होते चले जा रहे। अनछुई परिकल्पना, अभिनव विमर्श और नयी बहसें उभार नहीं ले पा रहीं। एक प्रकार से साहित्य का मशीनीकरण हुआ है- जहाँ उत्पादन के अंदाज में उपन्यासों, कहानियों, लेखों और कविताओं का थोक के भाव लेखन भरा पड़ा है। कहना जरूरी है कि साहित्य की सभी निर्णायक विधाओं में छद्म सर्जकों की बाढ़ सी आ गयी है। जहाँ जबरन कवि, आलोचक, कथापुरुष बनने की होड़ सी मच गयी है। दुर्योग से अब अनेक गैर साहित्यिक मायाजाल रचकर साहित्यकार कहलाने के तंत्र सुलभ हो चुके हैं। इस विकट माहौल में सबसे ज्यादा ठगा गया है-पाठक, जिसने कबीर, तुलसी, मीरा, प्रेमचन्द, निराला, प्रसाद और मुक्तिबोध की सृजनधारा का स्वाद चखा है, जिसने धूमिल और अवतार सिंह पाश की क्रांतिधर्मिता का ताप आत्मसात किया है, जो शरत् के भावावेशित कथारस और टैगोर की उत्तुंग कल्पनाधर्मिता में डूब चुका है, वह भला क्यों आज के बाधित कद वाले कवियों, कथाकारों और आलोचकों को वजन देगा ? पाठक यह मान चुका है कि हिन्दी साहित्य में क्लासिकी लौटाने की मांग अब मोहक जिद है, साकार होने वाली हकीकत नहीं। रचनाकार गद्‌गद है कि उसकी औसत दर्जे की कृति रातोंरात बहुचर्चित हो रही है, परन्तु पाठक ठकुआया हुआ है कि उस कृति में वैसा नायाबपन है कहाँ ? समकालीन हिन्दी साहित्य का पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध इस असफलता से ग्रस्त है कि पाठकों की कसौटी पर खरी उतरने वाली कृतियाँ न दे सका। जो व्यापक स्वीकार्यता 'कामायनी', 'गोदान', 'चाँद का मुँह टेढ़ा है', 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' और 'संसद से सड़क तक' ने हासिल की, वैसी स्वीकार्यता सपना होती जा रही।इसके मूल कारण गहरे हैं, सूक्ष्म और मनोवैज्ञानिक भी। रचनाकार रचने के लिए नहीं, साहित्यकार बनने के लिए रचनोत्सुक है। अर्थात् उसका शुरुआती और अंतिम लक्ष्य अविचल साहित्यकार सिद्ध होना है, जिसके लिए कलम एक युक्ति है, लिखना एक रूटीन वर्क और छपते रहना एक जरूरी उपाय। अर्थात् सर्जक के लिए साहित्य कैरियर बनाने का एक सुलभ माध्यम है। सृजन के प्रति लक्ष्य के इसी मौकापरस्त बदलाव ने कलम के कद को आश्चर्यजनक रूप से घटाया है। सवाल उठना स्वााभाविक है कि आज के सर्जक में स्वयं को छद्म के बूते अमर करने की आत्मग्रस्तता पनपी कैसे ? क्यों वह दुस्साहस कर सका कि रचनाकार बनने के लिए अंधकारपूर्ण रास्ते अपनाए जाएं ? इसका एक कारण है- नामलिप्सा, प्रसिद्धि का व्यामोह और दूसरों के भीतर, औरों की निगाहों में स्थापित होने की महत्वाकांक्षा, जो कि स्वभावबद्ध मानवीय प्रकृति है। जीते जी स्वयं को अमर होता देखने का स्वप्न आज तक कौन छोड़ पाया है ? वह भी तब, जब यह सच होना, पहले के किसी भी दौर की अपेक्षा सस्ता हो चला हो।

लेखन प्रायः प्रोडक्ट में तब्दील हुआ है। इतने व्यापक पैमाने पर आजकल के जैसा लेखन कभी नहीं हुआ, किन्तु कलासिकी पर संकट इसके पहले इतना ज्यादा पहले कभी नहीं आया। यदि कवि इस आदत से मुक्त होकर कविता लिखता कि कवि बनना है- तो ज्यादा अव्वल कविता रचता। यदि